ISSN 0973-8541, HUMANITIES AND DEVELOPMENT, VOL.18, NO.1, JAN-JUNE,2023 /88

आशा कार्यकर्ताः ग्रामीण उत्तर भारत के लिए एक आशा

– *रूबी बानो एवं ** प्रो0 (डॉ0) प्रमोद कुमार सिंह
*शोध छात्रा– समाजशास्त्र एवं ** शोध पर्यवेक्षक
के0एन0आई0पी0एस0एस, सुल्तानपुर
डॉ० राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय अयोध्या

किसी भी देश का सामाजिक आर्थिक विकास उस देश के सेहतमंद नागरिकों पर निर्भर करता है। किसी भी देश के विकास की कुंजी उस देश के स्वस्थ नागरिक हैं। भारत की सकल राष्ट्रीय आय की दृष्टि से विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है लेकिन जब बात स्वास्थ्य सेवाओं की आती है तो हमारी स्थिति काफी दयनीय साबित होती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की अनेक रिपोर्ट से लेकर इस क्षेत्र में हुए अनेक सर्वेक्षण यह बताते हैं कि हमारी सार्वजनिक चिकित्सा व्यवस्था सुधरने की बजाए और बदहाल होती जा रही है। भारत विश्व स्तर पर गुणवत्ता युक्त इलाज मुहैया कराने के लिए प्रसिद्ध है, किंतु इसके बावजूद अब भी स्वास्थ्य संबंधी कई कठिनाइयां हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में हमारी स्वास्थ्य सेवाएं सबसे बदतर हालात में हैं। भारत में आर्थिक असमानता के कारण स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता में भी काफी विषमता है। निजी अस्पतालों की वजह से संपन्न लोगों को तो गुणवत्ता युक्त स्वास्थ्य सेवा उपलब्ध हो जाती है किंतु गरीब एवं निर्धन लोगों के संबंध में यह स्थिति काफी चिंताजनक बनी हुई है। महंगी होती स्वास्थ्य सेवाओं के कारण आम आदमी द्वारा स्वास्थ्य पर किए जाने वाले खर्च में बेतहाशा वृद्धि हुई है जिससे यह वर्तमान समय में गरीबी को बढ़ाने वाला एक प्रमुख कारण माना जाने लगा है। भारत में अभी भी उच्च शिशु मृत्यु दर एवं प्रसव के दौरान मातृ मृत्यु दर बरकरार है यहां हर माह लगभग 80 हजार महिलाओं की मौत प्रसव के दौरान हो जाती है।

समाज में महिलाओं की स्थिति जितनी सशक्त प्रभावशाली और सुदृढ़ होती है समाज उतना अधिक उन्नत सभ्य और प्रगतिशील होता है। अनेक ऐतिहासिक एवं सामाजिक सांस्कृतिक कारणों से भारतीय समाज में महिलाओं, विशेषकर ग्रामीण–महिलाओं की स्थिति कमजोर बनी हुई है तथा शिक्षा रोजगार स्वास्थ्य एवं आर्थिक भागीदारी के क्षेत्र में भी उनकी स्थिति पुरुषों की तुलना में निरंतर कमजोर बनी हुई है। इस देश की कुल आबादी का लगभग आधा भाग होने के बावजूद महिला तुलनात्मक रूप से वंचित होने की समस्या से घिरी हुई है इन समस्याओं से निजात पाने के लिए भारत सरकार ने ग्रामीण स्वास्थ्य सेवाओं में आशा कार्यकर्ता की नियुक्ति की है जो ग्रामीण योजनाओं के बारे में लोगों को जागरूक करती हैं।

मूल शब्दः–

ग्रामीण स्वास्थ्य, आशा कार्यकर्ता, राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन, उत्तर प्रदेश ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन।

अध्ययन का उद्देश्यः–

भारत सरकार द्वारा चलाई जा रही राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन योजना के अंतर्गत ''मान्यता प्राप्त सामाजिक स्वास्थ्य कार्यकत्री'' (आशा) के योगदान का आंकलन करने से संबंधित है। जिसमें ग्रामीण–उत्तर भारत के क्षेत्रों में स्वास्थ्य संबंधी जानकारी व भारत सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं का गांव–घर तक प्रभावशाली स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करने का एक महत्वकांक्षी प्रयास है।

शोध प्रविधिः–

प्रस्तुत शोध पत्र विषय से संबंधित तथ्यों के संकलन एवं विश्लेषण पर आधारित है तथा इससे संबंधित तथ्यों का संकलन द्वितीय स्रोतों के रूप में विभिन्न पुस्तकों पत्र–पत्रिकाओं का प्रयोग किया गया है।

आशा कार्यकर्ता कौन हैः–

आशा को स्वास्थ्य की देखभाल के लिए जिम्मेदार कार्यकर्ता कहा जाता है जो सीमित मात्रा में स्वास्थ्य की देखभाल से संबंधित सेवाएं प्रदान करती हैं। आशा मुख्य रूप से गांव की निवासी विवाहिता/तलाकशुदा 25 से 45 वर्ष की आयु वर्ग की महिला होती है जो दसवीं कक्षा तक योग्य साक्षर महिला को चयन में उचित वरीयता दी जाती है। विभिन्न सामुदायिक समूह, स्वयं सहायता समूह, आंगनबाड़ी संस्थानों, ब्लॉक नोडल अधिकारी, जिला नोडल अधिकारी, ग्राम स्वास्थ्य समिति और ग्राम सभा को शामिल कर आशा का चयन एक कठोर प्रक्रिया के माध्यम से किया जाता है। आशा समुदाय को स्वास्थ्य के निर्धारकों जैसे– पोषण, बुनियादी स्वच्छता और स्वच्छ प्रथाओ, स्वस्थ रहने और काम करने की स्थिति, मौजूदा स्वास्थ्य सेवाओं की जानकारी, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण सेवाओं के समय पर उपयोग की आवश्यकता के बारे में जानकारी प्रदान करती हैं। महिलाओं को जन्म की तैयारी, सुरक्षित प्रसव के महत्व, स्तनपान और पूरक आहार, टीकाकरण, गर्भनिरोधक और प्रजनन पथ के संक्रमण/यौन संचारित संक्रमण (आरटीआई/एसबीआई) सहित सामान्य संक्रमण की रोकथाम और छोटे बच्चों की देखभाल के बारे में परामर्श देने का औचित्य कार्य करती हैं।

उत्तर प्रदेश ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन योजनाः–

उत्तर प्रदेश में राज्य ग्रामीण–स्वास्थ्य मिशन का गठन किया गया है। इस मिशन के तहत महिला स्वयंसेविकाओं का एक समूह तैयार किया गया है, जिसे अधिकृत सामाजिक स्वास्थ्य कार्यकर्ता ''आशा'' नाम दिया गया है। आशा समुदाय की ऐसी कार्यकत्री है जो समुदाय को स्थानीय स्वास्थ्य सेवा प्राप्त करने में सहायता करती है तथा कुछ छोटी–मोटी बीमारियों के लिए उपचार करने में भी सहायता प्रदान करती हैं। एक आशा औसतन 1000 की ग्रामीण आबादी में कार्य कर रही है। आशा को अपने काम में समुचित ज्ञान एवं कुशलता प्रदान करने के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम बनाए गए हैं। जिनके माध्यम से आशा को 12 महीनों के भीतर विभिन्न चरणों में, कुल 23 दिनों का प्रशिक्षण दिया जाता है। साथ ही हर दूसरे महीने दो दिवसीय पुनर्प्रशिक्षण की व्यवस्था रखी गई है। उत्तर प्रदेश में यह कार्यक्रम 7 सितंबर, 2005 से उत्तर प्रदेश ग्रामीण–स्वास्थ्य मिशन के रूप में आरंभ किया गया है।

उत्तर प्रदेश ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन के अंतर्गत आशा कार्यकर्ती की महत्वपूर्ण गतिविधियांः–

आशा कार्यकर्ता का प्रमुख कार्य स्वास्थ्य संबंधी जानकारियां देना व सेवाओं का लाभ उठाने के लिए समुदाय को प्रेरित करना है। प्रत्येक गर्भवती महिला की प्रसव पूर्व पूर्ण देखभाल सुनिश्चित कराना, संस्थागत प्रसव के लिए प्रेरित करना व साथ लेकर जाना, सभी नवजात शिशुओं की अनिवार्य देखभाल व जटिल नवजातों का संदर्भन सुनिश्चित करना, 1 वर्ष तक शिशु को नियमित टीकाकरण से प्रति रक्षित करवाना, आंगनबाड़ी व ए०एन०एम० को सहयोग देना, लोगों को घरों में शौचालय के निर्माण के लिए प्रेरित करना, सभी राष्ट्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण कार्यक्रमों में सहयोग देना, पंचायत स्वास्थ्य,जल एवं स्वच्छता समिति के नेतृत्व में आंगनबाड़ी कार्यकत्री, सामुदायिक कार्यकर्ताओं और ए०एन०एम० के साथ मिलकर 'ग्राम स्वास्थ्य योजना' तैयार करना।

निष्कर्षः–

ग्रामीण महिलाओं को उनके अनुकूल और नजदीक स्वास्थ्य सेवाओं को सस्ते दर पर उपलब्ध कराकर लोगों के स्वास्थ्य व्यवहार की जरूरतों को पूरा किया जा सकता है। संसाधनों की कमी के

कारण यहां पर महिलाओं को समय पर स्वास्थ्य सुविधाएं नहीं मिल पाती है, यद्यपि सभी प्रकार की योजनाएं सरकार द्वारा चलाई गई है। ग्राम महिलाओं में शिक्षा के कम स्तर के कारण जागरूकता की कमी है, जिसको आशा कार्यकर्ता महिला एवं बाल स्वास्थ्य में अपनी सक्रिय भूमिका निभा रही हैं। गर्भ काल के दौरान अधिक अन्न एवं संतुलित आहार के महत्व को समझाना, ग्रामीण आवास में स्वास्थ्य सुविधा का कुशल विस्तार करना, माता एवं शिशु के कल्याण से संबंधित योजनाओं को विकसित करना है। आशा कुपोषण जैसे खतरनाक बीमारी को रोकने में कहीं न कहीं कारगर साबित हो रही है क्योंकि आशा कार्यकर्ता जीरो माह से लेकर 5 वर्ष तक के बच्चों की देखभाल करने में सहायता करती हैं जिससे गांव के बच्चों एवं मां में पूर्ण टीकाकरण हुआ है क्योंकि आशा टीकाकरण के लिए पूरे गांव में मुनादी करती है और जो नहीं आ पाते उसको स्वयं लेकर उसके घर जाती हैं तथा अपने गांव के लोगों का डाटा भी बना कर रखती है ताकि भविष्य में कोई भी टीकाकरण से ना छूटे। आशा स्वास्थ्य करता महिलाओं का बच्चों के स्वास्थ्य सुधार में भरपूर प्रयास कर रही हैं तथा अभी भी प्रयास जारी है। स्वास्थ्य कार्यकर्ता घर–घर जाकर बच्चों महिलाओं व बुजुर्गों का स्वास्थ्य जांच करती रहती है जिससे परिवार में किसी को कोई बीमारी होती है तो उनका इलाज तुरंत आशा कार्यकर्ता के माध्यम से हो जाता है अतः कम खर्चे में अच्छा इलाज हो जाता है और उन्हें स्वास्थ्य लाभ प्रदान होता है।

संदर्भ सूचीः–

1. शर्मा, पी0, एन0–भारत में सामाजिक मुद्दे एवं समस्याएं,2018
2. आहूजा, राम–सामाजिक समस्याएं,2016
3. घोषल,बी०पी०, हेल्थ केयर इन रूरल एरियाजः रूरल हेल्थ प्रोग्राम इन इंडिया,इंडियाडायरेक्टरेट जनरल आफ हेल्थ सर्विस, मिनिस्ट्री आफ हेल्थ एंड फैमिली वेलफेयर, 1971।
4. सेठी, डॉ० नितिन, सामुदायिक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण,2012।
5. शर्मा, वी०पी०, मिश्रा, एम० के०, स्वास्थ्य शिक्षा, 2019।
6. खंडेला, मानचंद, महिला और बदलता सामाजिक परिवेश,2008।
7. राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, 2005,nhm.gov.in।
8. NIOS द्वारा प्रमाणित स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम।
9. स्वास्थ्य चेतनाः गांव की ओर।
10. आशा प्रशिक्षण मॉड्यूल– आशा के लिए दच्छताएं।
11. ग्रामीण स्वास्थ्य सांख्यिकी 2020–21
12. भारत–2009,गवर्नमेंट आफ इण्डिया।